Vol 6 Issue 7 January 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

ISSN: 2231-5063
IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 7 | JANUARY - 2017

सामाजिक समरसता के मनोवैज्ञानिक निर्धारक : वर्तमान भारतीय समाज की चुनौतियां

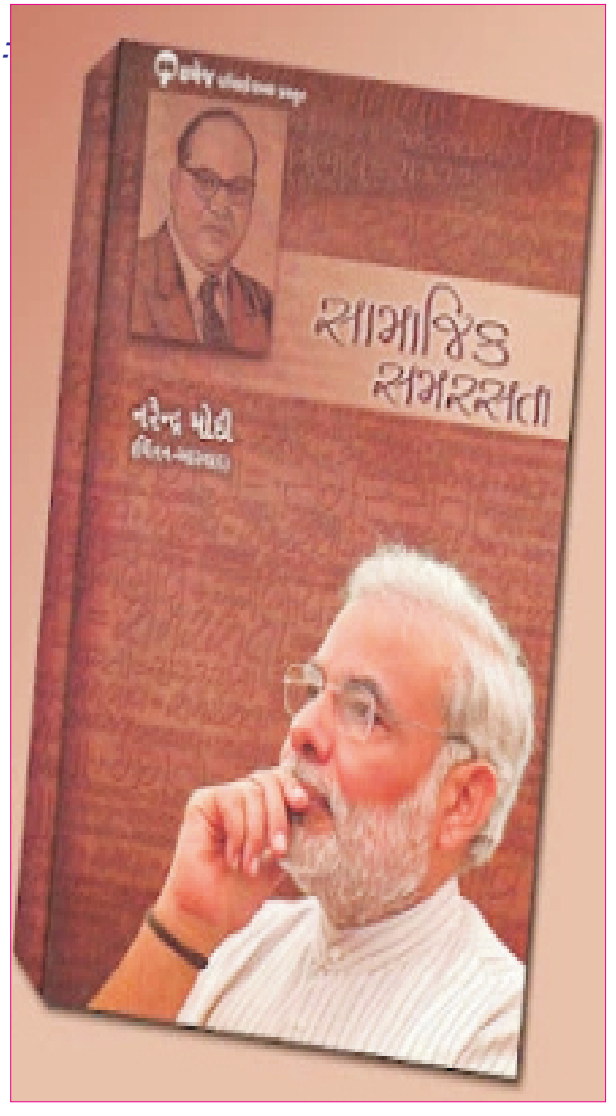

डॉ. एस. रूपेन्द्र राव
सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग ,
प सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर

सारांश –

सामाजिक समरसता के निर्धारण में एक सशक्त समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका सर्वोपरि है समाज के सुदृढ़, संगठित, प्रगतिशील होने में बहुत से महत्त्वपूर्ण कारको का होना आवश्यक है चूंकि समाज का निर्माण मानव समूहों का मात्र एकत्रित होना नहीं होता अपितु विचारों, व्यवहारों लक्ष्य की एकरूपता, कार्यशैली एवं चिंतन में समानता आदि कारकों की इसमें महती भूमिका होती है। मानव जीवन पर्यन्त अन्य व्यक्तियों, समूहों, समाजों से निरंतर व्यवहार करता है। मानव से मानव के स्वस्थ्य संबंध के आधारशिला मानसिक एकरूपता के साथ व्यवहारों एवं विचारों, चिंतन में समानता भी है यह तभी संभव है जब एक समाज का विकास स्वस्थ्य दूरगामी, प्रगतिशील चिंतन के साथ हो।

संकेत शब्द :– सामाजिक समरसता, भारतीय समाज, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक समूह।

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है विश्व की जनसंख्या का लगभग 1/6 बड़ा भाग भारत में निवासरत है विभिन्न भाषा–भाषी, संप्रदाय, धर्म, संस्कृति, जाति समूह के लोग यहां परस्पर सामाजिक रूप से एकत्रित हैं। एक समाज का अपने ही समाज अथवा जाति समूह से वैचारिक रूप में समानता तो दिखती है परन्तु जैसे ही वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे हम व्यवहारों का अवलोकन करते है वहाँ विचारों में विविधता देखने को मिलती है, एक सामाजिक रूप से समरस समाज में विचारधारा से जुडा रहना एक महत्वपूर्ण विषय है।

भारत के संदर्भ में स्वतंत्रता के पश्चात् हमने वैज्ञानिक, आर्थिक, समाजिक, दृष्टि से प्रगति तो की है, परन्तु एक अन्य पक्ष जो स्वतंत्रता के पश्चात् भी विशेष रूप से समाज संरचना में दिखता है, वह है सामाजिक समानता का ना होना, भारतीय परिदृश्य में संविधान में बहुत से अधिकार एवं कर्तव्य हमे प्राप्त हुए जिनमे कानून का निर्माण, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सुरक्षा से संबंधित अनेक अधिकार है इन सब तत्वो से हमे समता तो प्राप्त हो गई किन्तु भारतीय समाज की चुनौतियों में एक अति महत्वपूर्ण कारक सामाजिक समरसता का अभाव अभी भी दिखाई देता हैं। महापुरूषो द्वारा जिस समाज की संकल्पना की गई थी उनमे सामाजिक एवं आर्थिक संरचना इस प्रकार की हो कि जिसमे जनता की आर्थिक स्थिति को समानता प्रदान करते हुए सामाजिक न्याय एवं आर्थिक स्वतंत्रता सभी को मिल सके इस प्रकार की व्यवस्था हो।

उदेश्य :

भारतीय समाज में प्रत्येक वर्ग समूह में सम्मान, सहयोग, अवसर, सहभागिता एवं आत्मीयता (बंधुत्व का व्यवहार) होगा तब एक सामाजिक रूप से समरस समाज की संकल्पना पूर्ण होगी प्रस्तुत अध्ययन का उदेश्य है :–

1. सामाजिक समरसता के मनोवैज्ञानिक निर्धारको का अध्ययन करना।
2. सामाजिक व्यवहारों एवं समाज में व्यापत चुनौतियों का अवलोकन कर उन पक्षो को उजागर करना जो स्वस्थ तथा प्रगतिशील समाज के निर्माण मे बाधक है।

भूमिका :

सामाजिक समरसता की आवश्यकता एवं महत्व आज सारे विश्व समाज और विशेषकर भारतीय समाज के महत्वपूर्ण विषयों में से एक है एक विकसित राष्ट्र की संकल्पना उसमें निवासरत सामाजिक रूप से संगठित, स्वस्थ, सौहार्दपूर्ण एवं प्रगति शील चिंतन से युक्त नागरिकों के जीवन शैली से परिलक्षित होती है। सामाजिक समरसता के मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के निर्धारण में सामाजिक व्यवहार (**Social behaviour**) का अध्ययन आवश्यक सोपान है व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने वाले मनौवैज्ञानिक कारकों में व्यक्ति का समाजीकरण, उसको मिलने वाली प्रेरणा, एक व्यक्ति का अन्य व्यक्ति या समाज के प्रति मनोवृत्ति, व्यक्ति या विशेष समाज के प्रति पूर्वाग्रह, विभेद, व्यक्ति विशेष या समाज के प्रति रूढ़ियुक्तियां, समूह या व्यक्ति का प्रभाव, सामाजिक मानक एव अनुरूपता व्यवहार, सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, सामाजिक भूमिका एवं भूमिका संघर्ष, सामाजिक शक्ति, सामाजिक प्रभाव, सामाजिक पर्यावरण आदि कारक है।

सामाजीकरण :– जन्म से मनुष्य जैविक गुणों (**Biological trait**) से युक्त जीवित प्राणी मात्र होता है वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अतःक्रिया (**Interaction**) करता है जिससे उसे नए–नए अनुभवों की प्राप्ति होती हैं। इन अनुभवों के फलस्वरूप वह सामाजिक परंपराओं, नियमों एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है समाज के नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण (**Socialization**) कहा जाता है।

एटकिन्सन तथा एटकिन्सन तथा हिलगार्ड ;1983द्ध के अनुसार ''सामाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को सुगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।'' सामाजीकरण की प्रक्रिया के साथ व्यक्ति सामाजिक मान्यताओं विचारों एवं विशेष चिंतन शैली को विकसित करता है।

सामाजिक प्रेरक :– समाज जीवन एवं व्यक्तिगत जीवन की उन्नति में प्रेरणा (**Motivation**) का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रेरक (**Motive**) से तात्पर्य एक विशेष आंतरिक कारक (**Internal factor**) से होता है जो व्यक्ति को कार्य प्रारंभ करने तथा उसे लक्ष्य तक पहुँचने तक क्रियाशील बनाएं रखने के लिए निर्देशित करता है। मार्गन, किंग एवं रॉबिन्सन (1981) के अनुसार ''अभिप्रेरक व्यक्ति या पशु के भीतर की वह अवस्था है जो उनके व्यवहारों को लक्ष्य की ओर प्रेरित करती है।'' **Schreier, Heinrichs** तथा **Bogels** (2011) ने अपने अध्ययन में पाया कि संस्कृति आधारित सामाजिक मानकों का प्रभाव सामाजिक चिंता के स्तर पर पड़ता हैं।

सामाजिक मनोवृत्ति :– समरसता के निर्माण में व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति व्यक्ति का समाज के प्रति विशेष समाज का विशेष समाज के प्रति मनोवृत्ति भी महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है क्रेच, क्रेचफिल्ड तथा वैलेची ;1982द्ध के अनुसार ''किसी एक वस्तु के संबंध में तीन संघटकों का स्थायी तंत्र मनोवृत्ति कहलाता है संज्ञानात्मक यानी व्यक्ति के बारे में विश्वास, भावनात्मक संघटक यानी व्यक्ति से संबंधित भाव तथा व्यवहारात्मक या प्रवृत्ति संघटक यानी उस वस्तु या व्यक्ति के प्रति क्रिया करने की तत्परता।'' ''किसी समाज या व्यक्ति के प्रति विशेष धारणा का निर्माण और उसके अनुसार व्यवहार करना मनुष्य की प्रवृत्ति रही है। सामाजिक समरसता के महत्त्वपूर्ण कारकों में यह एक महत्त्वपूर्ण मनौवैज्ञानिक कारक है। सामाजिक पूर्वाग्रह, रूढ़ियुक्तियाँ, सामाजिक समरसता के बाधक कारणों में व्यक्ति का अन्य व्यक्ति या समाज के प्रति विशेष धारणा या पूर्वाग्रह भी महत्त्वपूर्ण तत्त्व है शाब्दिक अर्थ में पूर्वाग्रह से तात्पर्य व्यक्ति के किसी वस्तु, तथ्य, घटना तथा व्यक्ति के बारे में एकपूर्व निर्णय से होता है।

फैल्डमैन (1985) के अनुसार– ''किसी समूह के सदस्यों के प्रति ऐसे स्वीकारात्मक निर्णय या मूल्यांकन को पूर्वाग्रह कहा जाता है जो मुख्यतः उस समूह की सदस्यता पर आधारित होता है न कि सदस्यों कि विशेषगुणों पर।'' इसी प्रकार समूह प्रभाव एक अध्ययन **Bossil** (2003) ने किया और पाया कि किस प्रकार सामाजिक प्रभाव एक शक्तिशाली बल के रूप में व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों एवं मनोवृत्ति को प्रभावित करता है। सामाजिक स्वीकारिता के एक अध्ययन के **Johnsonson** तथा **Sheets** (2004) पाया कि व्यक्ति अपनें व्यक्तिगत अस्वीकारिता एवं जीवनगुणवत्ता की अपेक्षा समूह से प्राप्त सामान्य स्वीकार्यता को अधिक महत्त्व देता है।

भारतीय समाज की चुनौतियों में पूर्वाग्रह या विभेद समाज विशेष या व्यक्ति विशेष के प्रति एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। पूर्वाग्रह की स्थिति में संज्ञानात्मक संघटक से तात्पर्य किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति उन विचारों एवं विश्वासों से होता है जो एकतरफा तथा अनुचित (**Inacurate**) होते है, पूर्वाग्रह के इस विवेकहीन पक्ष की अभिव्यक्ति प्रायः स्थिराकृतियों **Stereotypes**) के रूप में व्यक्त की जाती है। आज के समय में समाज की आवश्यकता यह है कि सारा समाज समरसता का, समानता का व्यवहार करते हुए, आर्थिक सामाजिक सब प्रकार की विशेषताओं को प्राकृतिक दृष्टि से जितना होना आवश्यक है, उतना ही रहने दे, उससे ज्यादा न होने दे। यह करने के लिए आज के समय को देखते हुए काल सुसंगत व्यवस्था बनानी पड़ेंगी, वह अभी बनी नहीं है। भेद को हम पूर्णतः नकारते है और समाज में जागृति और प्रबोधन के पश्चात् नई व्यवस्था बनाने की प्रक्रिया चल पड़ेगी।

सामाजिक प्रभाव :– सामाजिक समरसता के मनोवैज्ञानिक कारकों में सामाजिक रूप में समूह या व्यक्ति के प्रभाव की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है सामूहिक प्रभाव के मुख्य बिन्दुओं में निर्वैयिक्तता (**Deindividution**) समूह ध्रुवीकरण एवं समूह सोच का विकास आदि है व्यैक्तिक व्यवहार पर समूह का एक ऐसा भी प्रभाव पड़ता है जिसमें व्यक्ति अपनी व्यैक्तिक्ता (**Individuation**) खो देता है क्योंकि इसमे आत्म अवमतता (**Self awareness**) लगभग समाप्त हो जाता है और वह अपने आपको समूह में पूर्णतः समावेशित कर लेता है। अमेरिका एवं पूर्वीय एशिया के संस्कृति का **Kim and Markus** (1999) में एक अध्ययन किया और देखा कि पूर्वीय एशिया की संस्कृति में व्यक्ति का व्यवहार सामानता एवं जुड़ाव के प्रति सकारात्मक रूप से अनुरूपता व्यवहार को बढ़ाते है।

समूह सोच :– समूह सोच एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें समूह के लोग अपने वास्तविक विचार को इस कारण अभिव्यक्त नहीं कर पातें है क्योकि समूह की आम सहमति समग्रता बनाए रखने के ख्याल से कही अधिक महत्त्वपूर्ण समझी जाती है। सामाजिक समरसता के बाधक कारणों में से एक महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण सामाजिक मानक तथा अनुरूपता व्यवहार है सेंकर्ड एवं बैकमैंन, (1974) के

अनुसार – ''सामाजिक मानक समूह के सदस्यों द्वारा साझा की गई एक ऐसी प्रत्याशा **(Expectation)** है जो उन व्यवहारों का उल्लेख करता है जिसे एक दी हुई परिस्थिति के लिए उपयुक्त समझा जाता है।'' समूह लक्ष्य के एक अध्ययन में **Parapavessis & Carson (1997)** ने पाया कि व्यक्तिगत समझौता समूह कार्य की अपेक्षा नगण्य हो जाता है। यदि एक समूह अच्छा कार्य कर रहा हो तो अनुरूपता व्यवहार में वृद्धि होती जाती है।

सामाजिक मानक का निर्माण सामूहिक अंतःक्रियाओं से प्राप्त अनुभवों एवं व्यवहारों के आधार पर होता है। सामाजिक समरसता के निर्धारण में सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, सामाजिक भूमिका एवं भूमिका संघर्ष, सामाजिक शक्ति, सामाजिक प्रभाव और सामाजिक पर्यावरण आदि कारको का प्रभाव भी पड़ता है। **Rudman & Fairchild (2004)** ने एक अध्ययन किया और यह सुझाव दिया कि किस प्रकार एक जटिल व्यवहार लगातार दण्डित होता है और वह सामाजिक मानकों के अनुरूप विकसित और प्रभावित होता हुआ अस्वीकृत हो जाता है। समरसता या समानता की अवधारणा समता, शांति, सहयोग अनुबंध और ध्यान से सार्थक रूप से संबंधित है **Kjell et.al (2013)** .ने एक अन्य अध्ययन में पाया कि समानता या समरसता की तुलना जीवन के संतोष से की जाती है जो कि प्रभावी रूप से जाति के मनोवैज्ञानिक जीवन गुणवत्ता के कारक से जुड़ा है तथा जीवन में व्याप्त संतोष हमारे प्रसन्नता से है।

वर्तमान भारतीय समाज की चुनौतियाँ जो सामाजिक समरसता के निर्माण में बाधक है तथा जिनमें जागरण तथा वैचारिक प्रबोधन की आवश्यकता है।

01. अस्मिता जागरण :– सामूहिक समाज जीवन का बोध जगाना इसके लिए भारत में सामाजिक जीवन में विविध आंदोलन चल रहें है। उनका प्रयास इन अस्मिताओं व अपने स्वाभिमान को जगाना होता है।

02. मानवीय अधिकार :– मानवधिकारों के नाम पर समाज को परस्पर संघर्ष की दिशा में ले जाने का आंदोलनात्मक स्वरूप दिखाई देता है। साहित्य व धर्मग्रंथो में कही गई बातो को गलत ढंग से संदर्भ हीनता के आधार पर बताकर भ्रांति निर्माण करने का प्रयास होता है।

03. विदेंशी शक्तियाँ :– भारत के मूल निवासी कौन है, तो हम है। हमारा विरोध करने वाले सवर्ण (आर्य) है, यह भाव निर्माण करने का प्रयास होता है। इसकी चर्चा **(U.N.O.)** तक में होती है। आर्य बाहर से आए और यहां रहने वाले समूहों पर आक्रमण करके उनकी मूल परम्पराएं नष्ट करके, अपनी परम्परा को लेकर संघर्ष खड़ा हुआ और इसी के कारण मानसिक दूरी, भेदभाव, ऊँच–नीच, स्पृश्यता–अस्पृश्यता का प्रवेश हुआ। ऐसी ही भ्रांति मनुस्मृति के विषय में उत्पन्न की गई अब हमारे पास एक ही स्मृति वह है 1950 में निर्मित हमारा संविधान।

आज भारतीय समाज की वर्तमान में व्याप्त चुनौतियों में है

01.असंगठित हिन्दू समाज
02.चिंतन के विपरीत व्यवहार
03.जातिगत संकुचित भावनाएं
04.वर्ण और जाति संकल्पना के प्रति, व्याप्त भ्रांत धारणाएं आदि भी है।

निष्कर्ष :–

सामाजिक समरसता का निर्माण आज के समय की मांग है। विशाल भू–भाग वाले भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता है दूर अतीत में 5000 वर्ष पूर्व से आज तक यहाँ जाति, उपजातियां रही अनेक राज्य जिनमें युद्ध भी हुआ पर हमारा देश एक रहा 2500 वर्ष से हमारे देश पर विदेशी आक्रमण होते रहें 150 वर्ष ब्रिटीश शासन रहा हमने एक राष्ट्र के रूप संघर्ष किया और स्वराज्य प्राप्त किया। 1947 में हमने अपना स्वनिर्मत संविधान अपने आपको दिया उसमें हमने घोषणा की कि हम अपने आपको वर्गविहीन और जाति विहीन समाज के रूप में स्वयं का निर्माण करेंगें। संविधान ने अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया है।

हमारे प्राचीन शास्त्र ग्रंथ अथर्ववेद में कहा गया है।

अज्योष्ठासो अकानिष्ठास एते।
सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।।

कोई भी श्रेष्ट नहीं और कोई भी भिन्न नहीं है। सभी को सबके हित के लिए प्रयत्न करना चाहिए । और सब की मिलकर प्रगति करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

(1) भागवत एम., जोशी एस., एवं सोनी एस. (2015) हिंदुत्व सामाजिक समरसता जैन, बौद्ध, सिख धर्मो का सार मातृशक्ति सुरूचि प्रकाशन नई दिल्ली।
(2) जोयिस आर. एम. (2010) श्रीगुरूजी और सामाजिक समरसता सुरूचि प्रकाशन नई दिल्ली।
(3) देवास डी. एम. (1997) हिन्दू संगठन और सत्तावादी राजनीति जागृति प्रकाशन नोएडा।
(4) सुल्तानपुरी एस. (2005) भारतीय संस्कृति के जागरूक प्रहरी पं. दीनदयाल उपाध्याय साधना पब्लिकेशन दिल्ली।
(5) सिंह लल्लू (2001) एकात्म मानव दर्शन तथा पाश्चात्य चिंतन एक विश्लेषण अर्चना प्रकाशन भोपाल।
(6) गोपाल के (2013) भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
(7) सिंह ए. के (2002) समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन दिल्ली।
(8) भारत का संविधान (पूर्ण पाठ) **https://india.gov.in**
(9) काश्यप एस. (2016) भारत का संविधान शासन और हम राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली।
(10) Sehreier S., Heinriehs N., Begals S.(2011) Depress Anxiety 27(12):1128-1134.
(11) Kjell O., Heffron R., Garcia D., Sikstoms S. (2013) Enhancing environmental and Social Sustainability: attuned w3ith life scale as a complement to satisfaction with life, Third world congress on positive Psychology. Loss Angelis California USA.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org